परम पूज्य गुरुदेवश्री कानजी स्वामी के प्रवचन
श्री समयसार गाथा ८७,
सोनगढ़, ता. १३-६-१९६९,
प्रवचन १६४, ४५ - ५१ मिनट

चली थी वहाँ, राजकोट! वहाँ जीव के द्वारा भाया जाता है ऐसा कहा है।

वहाँ तो ऐसी बात है कि अपना भगवान जो ध्रुव परम स्वभाव है परम पारिणामिकभाव... ये ही या गया पृष्ठ, हाथ में आया... ३२० गाथा है न, वो जयसेन आचार्य की टीका, उसका गुजराती बनाया। राजकोट में माँग की, बहुत सूक्ष्म है। बहुत सूक्ष्म भाव है! राजकोट में माँग की तो फिर यहाँ (सोनगढ़) आदमी को भेजा था (गुजराती अनुवाद के लिए)। हिन्दी (टीका में) से (हम) इतनी बात नहीं कर सकते और संस्कृत में से (भी) हम इतनी नहीं कर सकते, गुजराती हो तो स्पष्ट करूँ। तो फिर गुजराती बनाया (हिम्मत)भाई ने। बहुत सूक्ष्म है! आठ व्याख्यान हुए थे। तो उसमें तो वहाँ तक कहा है उसमें, जयसेन आचार्य की टीका - कि भगवान आत्मा जो परम पारिणामिक ध्रुव स्वभाव है, वो उसमें तो, उसमें तो बंध भाव नहीं, मोक्ष भाव नहीं, मोक्षमार्ग की पर्याय नहीं, बंध के कारणरूप पर्याय नहीं। ये चार पर्याय से रहित ध्रुव स्वभाव वो आत्मा है, आत्मा है। ध्रुव स्वभाव वह आत्मा है, ऐसा कहा। उत्पाद-व्यय, वह परमार्थ आत्मा नहीं। उत्पाद-व्यय - मोक्ष की पर्याय भी उत्पाद-व्यय है, मोक्षमार्ग की पर्याय उत्पाद-व्यय है, बंध भी उत्पाद-व्यय है, बंध का मार्ग उत्पाद-व्यय है। वह तो (एक) समय (की) पर्याय है। उस पर्याय रहित जो त्रिकाली द्रव्य है वह जीव का वास्तविक, असली स्वरूप है।

मुमुक्षु: वाह गुरुदेव!

पूज्य गुरुदेवश्री: समझ में आया? है न, उसमें है वह, हों! उसमें है। **(शुद्धपारिणामिक भाव) बंध की कारणभूत जो क्रिया-रागादिपरिणति, उस रूप नहीं है। मोक्ष की कारणभूत जो क्रिया- शुद्धभावना परिणति, उस रूप भी नहीं है।**

उसमें है नहीं। जयसेन आचार्य की टीका की बात है। बहुत सूक्ष्म बात है! बहुत सूक्ष्म है! देखो!

सिद्धांत में कहा है कि शुद्धपारिणामिक(भाव) निष्क्रिय है। त्रिकाल भाव, ध्रुव भाव निष्क्रिय है - उसमें मोक्ष की पर्याय की क्रिया नहीं है, मोक्षमार्ग की क्रिया नहीं है। सम्यग्दर्शन-ज्ञान के परिणाम, ध्रुव निष्क्रिय ध्रुव चैतन्य है, उसमें है नहीं। समझ में आया?

परमार्थ दृष्टि से देखने पर यह जीव न तो उपजता है, न मरता है, न बंध ही करता है, न मोक्ष ही प्राप्त करता है - ऐसा श्री जिनेन्द्र भगवान कहते हैं, (गाथा ६८) परमात्मप्रकाश में। आहाहा! यहाँ तो (गाथा ८७ में) भगवान आत्मा, यहाँ तो पर से भिन्न बताते हैं अभी तो। समझ में आया? अभी पर से भिन्न, मेरी पर्याय मेरे से और उसकी पर्याय उससे, इतना निर्णय करना न आये; उसे विकारी और अविकारी पर्याय से मेरी चीज बिल्कुल भिन्न है (यह उसे कैसे समझ में आये?) भिन्न है द्रव्यस्वभाव, वह सम्यग्दर्शन का विषय है। निष्क्रिय ध्रुव वह सम्यग्दर्शन का विषय है। मोक्ष और मोक्ष

का मार्ग वे सब सम्यग्दर्शन के विषय नहीं हैं। बहुत सूक्ष्म है।

वहाँ तुम्हारे **लालभाई** हैं न, राजकोट में। **लालचंदभाई - बहुत सूक्ष्म अभ्यासी हैं। बहुत सूक्ष्म! बहुत अच्छे अभ्यासी! सूक्ष्म में सूक्ष्म माँगते हैं वहाँ जाते हैं तो, सूक्ष्म में सूक्ष्म बात लाओ। तो (हमने पूछा) बोलो भाई, कौन कौनसी गाथा? तो (लालचंदभाई ने) लिखा - यह गाथा, यह गाथा, यह गाथा। बहुत अभ्यासी!**

मुमुक्षु: जी हाँ! सार-सार गाथा!

पूज्य गुरुदेवश्री: हाँ, सार-सार, ख्याल है, ... है न, बहुत। परमात्मप्रकाश में से...<b>बहुत सूक्ष्म अभ्यासी। बहुत आत्मार्थी। बहुत अंतर में मंथन बहुत है। वहाँ (राजकोट में) वाँचन करते हैं। यहाँ आते हैं न, रविवार आता है तो आते हैं, परसों। कल शनिवार, कल शनिवार है न, रविवार को आते हैं - इस रविवार को।

और सूक्ष्म माँगते हैं वहाँ राजकोट जाते हैं तो।

३०० घर हैं ३०० अपने श्वेताम्बर में से दिगम्बर हुए, ३००।

यहाँ कहते हैं भगवान, दर्पण की अवस्था तो अपने से, अपने द्वारा, अपने में, षट्कारक से हुई है। वह मोर के कारण बिल्कुल नहीं। मोर की अवस्था दर्पण के कारण बिल्कुल नहीं -- यह तो फिर भी लोगों को बैठता है - ठीक भाईसाहब, यह तो अभी ठीक। कि मोर की अवस्था दर्पण के कारण (नहीं)। लेकिन दर्पण में अवस्था - यदि मोर न हो तो नहीं बन सकती! तो मोर आया, तो दर्पण की अवस्था का परिणमन उसके (मोर के) कारण हुआ? उसके अस्तित्व के कारण हुआ? बिल्कुल नहीं! अपनी उस पर्याय के अस्तित्व के कारण वह परिणमन दर्पण में अपने से हुआ है। मोर है इसलिए हुआ है, मोर का अस्तित्व सामने है इसलिए हुआ है - बिल्कुल झूठी बात है। मोर की पर्याय का सत्, सत् (मोर) में; और दर्पण की पर्याय का सत्, दर्पण में।